Vol 3 Issue 9 Oct 2013

ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief

H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume-3, Issue-9, Oct-2013
ISSN 2230-7850

Available online at www.isrj.net

आत्मा के दश धर्म और प्रजातंत्र व्यवस्था

शोभा राठी
इतिहास विभाग सिहांनिया विश्वविद्यालय पचेरी बारी झुन्झनू राज

सारांश :आत्मा के दश धर्म उत्तम क्षमा, मार्दव,आर्जव,शौच,सत्य,संयम, तप,त्याग,आकिंचन,ब्रह्मचर्य है। प्रजातन्त्र और दश धर्म का लक्ष्य व प्रयोजन भिन्न है। प्रजातन्त्र स्थानीय लौकिक शासन व्यवस्था है, जिसमें जनता केन्द्र है, जबकि दश धर्म आत्मा के माध्यम से मोक्ष अर्थात मुक्ति का धर्म है।

अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन के अनुसार प्रजातंत्र जनता का जनता के लिये जनता के द्वारा शासन है। जनतन्त्र बहुमत से चलता है धर्म से नही, प्रजातंत्र का उद्देश लौकिक है एवं दश धर्म का पारलौकिक प्रजातंत्र में बहुमत अर्थात 15 प्रतिशत यदि दश धर्म को गलत कर दे तो वह गलत होगा लेकिन प्रजातंत्र में शासन बहुमत का चलेगा। प्रजातंत्र में दश धर्म वही तक सही है जहां तक व्यक्ति 51 प्रतिशत सही माने। प्रजातंत्र की सफलता के लिये आर्थिक समृद्धि उच्च स्तरीय लौकिक ज्ञान और जनता के प्रति उत्तरदायित्व होना आवश्यक है। दश धर्म एक अनुशासन है :– मुक्ति के लिये। प्रजातंत्र शासन है स्थानीय प्रांतीय व लौकिक समस्याओं के समाधान के लिये इसमें स्वतंत्रा प्रमुख है। और दश धर्म आत्मा के माध्यम से मोक्ष का धर्म है।

प्रस्तावना :

तत्वार्थ सूत्र में आचार्य उमास्वामी ने सम्यक दर्शन सम्यक ज्ञान व सम्यक चरित्र को मोक्ष कहा है। प्रजा में इन त्रिरत्नों का स्वरूप व्यवहारिक दृष्टि से इस प्रकार है :–

उदेश्य

सम्यग्दर्शन

मुक्ति के लिए सांतों तत्वों (जीव,अजीव,आश्रव,बन्ध,संवर,निर्जरा,मोक्ष) पर दृढ आस्था का होना सम्यग्दर्शन है। सच्चे देव,शास्त्र और गुरू को मोक्ष के कारणभूत मानकर उनका आठ अंग सहित तीन मूढता रहित तथा आठ मद रहित दृढ विश्वास करना (उनकी पूजा,भक्ति करना तथा विनय करना,तरण,तारण मान कर आदर सम्मान देना) सम्यग्दर्शन कहलाता है।

सम्यग्यदर्शन के आठ अंग :–

1.निःशंक्ति
2.निःकाक्षित
3.निर्विचिकित्सा
4.अमूढदृष्टि
5.उपगूहन अंग
6.स्थितिकरण
7.वातसल्य अंग
8.प्रभावना

सम्यक् चारित्र

पापमय आरम्भ का परित्याग करना सम्यक् चारित्र है। चारित्र मोक्षमार्ग का एक प्रधान अंग है। अभिप्राय के सम्यक् व मिथ्या होने से चारित्र भी सम्यक् व मिथ्या हो जाता है। निश्चय, व्यवहार,सराग,वीतराग, स्व, पर आदि भेदां से वह अनेक प्रकार से निर्दिष्ट किया जाता है परन्तु वास्तव में व सब भेद–प्रभेद न किसी एक वीतरागता रूप निश्चय चारित्र समा जाते है।

सम्यक् चारित्र के 13 अंग है :–

पांच महाव्रत (अहिसा,सत्य,अस्तेय,अपरिग्रह,बह्मचर्य) पांच समिति (ईर्या,भाषा,ऐषणा,आदान–निक्षेपण,प्रतिष्ठापन) और तीन गुप्ति (मन,वचन,काय)

चारित्र की भावनाएँ:–

चलने आदि के विषय में यत्न रखना अर्थात पांच समितियों का पालन करना मन,वचन,काय की शुद्धियों का पालन करना तथा परीषहों को सहन करना। ये चारित्र की भावनाए है।

सम्यक् व मिथ्या चारित्र

संसारियों का चारित्र वास्तव में दो प्रकार का है – सम्यक् चारित्र और मिथ्या चारित्र। भगवान अर्हत परमेश्वर के मार्ग से प्रतिकूल मार्गाभास में मार्ग का आचरण करना मिथ्या चारित्र है। अथवा निज आत्मा के अनुष्ठान रूप से विमुखता मिथ्याचारित्र है। सम्यक् चारित्र क्योकि समस्त पाप मुक्त मन,वचन,काय के योगों के त्याग से सम्पूर्ण कषायों से रहित होने के कारण निर्मल पदपदार्थो से विरक्ततारूप चारित्र होता है अतः वह आत्मा का स्वरूप है।

सम्यक् चारित्र के लक्षण

सम्यक्चारित्र के लक्षण निश्चय व व्यवहार या सराग व वितराग चारित्र के रूप है। निश्चय जीव का अनतरंग भाव चारित्र व व्यवहार जीव का ब्राह्य त्याग चारित्र है।

निश्चय चारित्र का लक्षण :–

1.ब्राह्मन्तर क्रियाओं से निवृति :– पाप व पुण्य दोनो का त्याग करना चारित्र है।
2. व्यवीार चारित्र से साध्य निश्चय चारित्र का निरूपण करते है। ज्ञानी जीव के जो संसार के कारणों को नष्ट करने के लिए ब्राह्य और अन्तरंग क्रियाओं का विरोध होता है, वह उत्कृष्ट सम्यक चारित्र है। योगियों का प्रमाद से होने वाले कर्मो से रहित होने का नाम चारित्र है।
3.चारित्र वास्तव में धर्म है, जो धर्म है वह साम्य है साम्य मोह क्षोम रहित आत्मा का परिणाम है। इष्ट अनिष्ट पदार्थो में समता भाव धारण करने को सम्यक्चारित्र कहते है। वह सम्यग्चारित्र यथार्थ रूप से तृषा रहित मोक्ष की इच्छा करने वाले वस्त्ररहित और हिसां का सर्वथा त्याग करने वाले मुनिराज के ही होता है।
4. स्वरूप में चरण करना चारित्र है :– अपने में अर्थात ज्ञान स्वभाव में ही निरन्तर चरने से चारित्र है।
5.स्वात्मा में स्थिरता चारित्र है :– अपनी अत्मा को जानकर के उसका श्रद्धान करके जो परभाव को छोड़ता है वह निजात्मा का शुद्ध भाव चारित्र होता है।

व्यवहार चारित्र का लक्षण

यह करने योग्य कार्य ऐसा ज्ञान होने के अनन्तर अकर्तव्य का त्याग करना चारित्र है।

हिसां, असत्य चोरी तथा मैथुन और परिग्रह इन पांचों पांपों की प्रणालियों से विरक्त होना चारित्र है। अशुभ कार्यो से निवृत होना और शुभकार्यो से प्रवृत होना है उसको चारित्र जानना चाहिए। मन से, वचन से, काय से कृतकारित अनुमोदना के द्वारा जो पापरूप क्रियाओं का त्याग है उसकों सम्यग्यचारित्र कहते है।

पांच महाव्रत :–

जैन धर्म में पांच महाव्रत का विधान है। व्रत का अर्थ होता है दृढ प्रतिज्ञ होना यह पूर्ण रूप से तय कर लेना की चारित्र को उन्नत करना है। यह व्रत लेना की अंहिससा,सत्य,अस्तेय,आपरिग्रह और बह्मचर्य का समान पालन करना है।

गृप्ति :–

मन,वचन व काय की प्रवृति का निरोध करके मात्र ज्ञाता,द्रष्टा भाव से निश्चय समाधि धारना पूर्णगुप्ति है और कुछ शुभराग मिश्रित विकल्पों व प्रवृतियों सहित यथा शक्तिस्वरूप से निमग्न रहने का नाम आंशिक गुप्ति है। पूर्णगुप्ति ही

पूर्णानिवृति रूप होने के कारण निश्चय गुप्ति है और आंशिकगुप्ति प्रवृति अंश के साथ वर्तने के कारण व्यवहार गुप्ति है।

गुप्ति के भेद :–

गुप्त तीन प्रकार की है– कायगुप्ति, वचनगुप्त और मनोगुप्ति

मन,वचन,काय गुप्ति के निश्चय लक्षण

रागद्वेष से मन परावृत होना मनोगुप्ति का लक्षण है। असत्य भाषणादि से निवृत होना अथवा मौन धारण करना वचनगुप्ति का लक्षण है। औदारिकादि शरीर की जो क्रिया होती रहती है उससे निवृत होना कायगुप्ति का लक्षण है, अथवा हिंसा चोरी वगैरह पाप क्रिया से परावृत होना कायगुप्ति है तथा रागद्वेष से अवलम्बित समस्त संकल्पों को छोड़कर जो मुनि अपने मन को स्वाधीन करता है और समता भाव में स्थिर करता है तथा सिद्धान्त के सूच की रचना में निरन्तर प्रेरणारूप करता है उस बुद्धिमान मुनि के सम्पूर्ण मनोगुप्ति होती है। भले प्रकार वंश करी है वचनों की प्रवृति जिसने ऐसे मुनि के तथा संज्ञादि का त्याग कर मौनरूढ होने वाले महामुनि के वचनगुप्ति होती है। स्थिर किया है शरीर जिसने तथा परिषह आ जाने पर भी अपने पर्यकासन से ही स्थिर रहे किन्तु डिगे नही उस मुनि के ही कायगुप्ति मानी गयी है।

समिति :–

चलने–फिरने में, बोलने–चालने में, आहर ग्रहण करने में वस्तुओं को उठाने–धरने में और मलमूत्र निक्षेपण करने में यत्न पूर्वक समयक् प्रकार से प्रवृति करते हुए जीवों की रक्षा करना समिति है।

समिति के भेदः–

ईया,भाषा,ऐषणा,आदान–निक्षेपण और प्रतिष्ठापना ये पांच समिति संयम शुद्धि के कारण कही गयी है।

एषणासमिति :–

उदगमादि छयालिस आहर के दोषों रहित भुख मेटना व द्वेष सहित समभाव कर भोजन करना ऐसे आचरण करनेवाले के एषणासमिति है। गुण रत्नों को ढोने वाली शरीररूपी गाड़ी को समाधि नगर की ओर ले जाने की इच्छा रखने वाले साधु का जठराग्नि के दाह को शमन करने के लिए औषधि की तरह या गाड़ी में ईधन देने की तरह अन्नादि आहर को बिना स्वाद के ग्रहण करना एषणासमिति है। देश,काल और प्रत्यय इन नव कोटियों से रहित आहार ग्रहण किया जाता है।

सन्दर्भ सूचि

आत्मा के दश धर्म और प्रजातंत्र व्यवस्था
1.आचार्य समन्तभद्र :– अनुवादिका आर्यिकाश्री स्याद्वादमती माताजी रन्करण्ड श्रवकाचार प्रकाशक भारत वर्षिय अनेकान्त विद्वत परिषद महावीर प्रेस,भेलपुर वाराणसी–10 सन् 2002 पृष्ठ10
2.वही,पष्ठ 11
3.आचार्य समन्तभद्र : अनुवादिका स्पाद्वामती माताजी रत्नकरण्ड श्रावकाचार प्रकाशक भारत वर्षिय अनेकान्त विद्वत् परिषद महावीर प्रेस भेलपुर वाराणसी–10 सन् 2002 पृष्ठ 20
4.वही पृष्ठ 21–22
5.आचार्य समन्तभद्र :– वीरनन्दी विरचित चन्द्रप्रभ चरितम् अनुवादक एवं सम्पादक –पं. अमृतलाल शास्त्री प्रकाशक भारत वर्षिय अनेकान्त विद्वत परिषद भोलानाथ नगर शाहदरा दिल्ली सन् 1990 18 / 124
6.क्षु. जिनेन्द्र वर्णी – जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश भाग–2 भारतीय ज्ञान पी0 प्रकाशक, नई दिल्ली सन् 1995 पृष्ठ 282
7.व्ही पृष्ठ 282
8.सुश्री प्रतिभा जैन हिन्दु तथा जैन नैतिक आदर्शो का समीक्षात्मक अध्ययन अप्रकाशित शोध ग्रन्थ स्नातकोतर दर्शन विभाग रॉची विश्वविद्यालय रॉची सन् 1980 पृष्ठ 202

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net